(सारस्वत खत्री पाठशाला द्वारा आयोजित शताब्दी वर्ष समारोह में दिनांक 30/01/2020 को मुख्य अतिथी मा0 न्यायमूर्ति श्री पंकज मित्थल जी का सम्बोधन)

सर्वोदय

स्नेहीजन एवं उपस्थितजन

सभी को मेरा अभिवादन व नमस्कार।

आज मेरा प्रिय बसंत पंचमी का दिन है। बड़ा ही शुभ व हर्षो उल्लास का पर्व है। यह विद्या और ज्ञान अर्थात माँ सरस्वती का भी पूज्य दिवस है। अतः आज के दिन मुझे निराला की कुछ पंक्तियाँ बरबस ही याद आ जाती है।

सखि, बसंत आया!
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया
सखि, बसंत आया!

आपका विद्यालय आज शताब्दी वर्ष मना रहा है। सौ वर्ष किसी संस्थान के लिए एक लम्बा सफर है जो उसे इतिहास में ले जाता है। आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि आपके संस्थापकों ने उस समय क्या सोच, समझकर व किस प्रेरणा के साथ इस विद्यालय की नींव रख होगी। मैं लाला सदनलाल खन्ना व उनके भ्राता लाला संवलदास खन्ना जी की स्मृति को नमन करते हुए विश्वास से कह सकता हूँ कि उन्होंने इस संस्था की स्थापना व्यवसायिक तौर पर नही वरन् समाज में नैतिक मूल्यों व शैक्षणिक वृद्धि के उद्देश्य से की होगी।

वर्ष 1921 में जो बीज उन्होंने बोया था वह अंकुरित हो आज कितना पुष्पित और पल्लवित है यह जग जाहिर है और आप सबके सामने। इसमें हर वर्ष नयी कोपलें, यहाँ के समाज के प्रतिषठित एवं बुद्धिजीवियों के प्रोत्साहन एवं सहयोग से जन्म लेती हैं और इसे दिन प्रतिदिन अधिक निखारती है।

लाला सदनलाल व सांवलदास खन्ना जी का **"सा विद्या या विमुक्तये"** का मंत्र आज अच्छी तरह से फलीभूत हो रहा है। आपकी संस्था आज एक खत्री पाठशाला प्राइमरी विद्यालय व चार अन्य संस्थाएं टेगोर पब्लिक स्कूल और सांवलदास महिला महाविद्यालय जैसी प्रमुख और प्रतिष्ठित संस्थाएं संचालित कर रहा हैं। मैं इन संस्थाओं के संचालकों को उनके परिश्रम के लिए साधूवाद देता हूँ।

इस विशाल, भव्य व प्रख्यात **"शिक्षा के मन्दिर"** में खड़े होने का सौभाग्य प्राप्त

हुआ है तो मैं समझता हूँ कि मुझे शिक्षा के ही विषय में कुछ बात करनी चाहिए।

शिक्षा उज्जवल भविष्य की राह ही नहीं वरन् सभी का मौलिक अधिकार भी है या कहा जाए मौलिक अधिकार से भी बढकर यह मानव अधिकार की श्रेणी में आती है।

विद्या वह वस्तु है जिसे न कोई चुरा सकता है, जिसे न कोई राजा छीन सकता है, जो भाइयों में बाँटी भी नहीं जा सकती हैं, जिसमें कोई व्यय भार भी नही और जो प्रयोग व खर्च करने पर निरंतर बढती ही रही है। अतः विद्या अपने आप में सबसे बड़ा धन है।

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।

"हनुमान चालीसा" में भी बाबा तुलसी दास जी विद्या और ज्ञान के महत्व को समझते हुए प्रभु से प्रार्थना में विद्या की मांग की करते हैं

"बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार"।

शिक्षा का महत्तव अपनी जगह है। पर प्रश्न यह है कि आखिरकार शिक्षा किस प्रकार की होनी चाहिए? शिक्षा का उददेश्य क्या है?

साधरणतया सभी शिक्षा को जीवन में सफल होने का साधन मानते हैं। देश की सरकार इसे केवल आंकड़ों के तौर पर लेती है और साक्षरता बढाने का यंत्र समझती है। विधिक रूप से कोई भी बच्चा जो सात वर्ष की आयु या उससे अधिक है और लिख पढ लेता है वह सरकारी मानकों के हिसाब से साक्षर माना जाता है। सरकार का उददेश्य केवल इस साक्षरता अभियान को बढाना है। इसी कड़ी में आगे पढने वालों को बड़ी–बड़ी डिग्री देकर सरकार अपने सामाजिक कल्याण के दायित्व से छुटकारा पा लेती है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी बड़े स्पष्ट शब्दों में कहते थे किः–

"Literacy in itself is no education."

उनका यह भी मानना था किः–

"The aim of university education should
be to turn out true servants of the people
who will live and die for the country".

अतः हमें मानना पड़ेगा कि साक्षरता व डिग्रियों के दृारा जीवन में सफलता भले ही मिल जाए परन्तु वह एक अच्छे राष्ट्र के निर्माण में साधक नहीं हो सकते।

राष्ट्र निर्माण के लिए सर्वप्रथम चरित्र निर्माण और फिर नागरिकता और समाज

निर्माण की आवश्यक्ता है। यह तभी संभव है जब हम मानवीय मूल्यों व नैतिकता पर आधारित शिक्षा भारतीय संस्कृति, समरसता व दृष्टिकोंण के आधार पर दें।

''ज्ञानम अमृतम'', ज्ञान ही अमृत है परन्तु चरित्र, ज्ञान और प्रतिभा से भी ऊंचा होता है और जो शिक्षा चरित्र निर्माण न कर सके उसका कोई मूल्य नहीं होता। मूल्यों पर आधारित नैतिक शिक्षा की बुनियाद पर ही हम नये भारत की एक मजबूत नींव रख सकते हैं।

प्राचीन काल में गुरूकुल पद्धति से शिक्षा दी जाती थी। सभी विद्यार्थी नगर से दूर वन आदि में बने ऋषि आश्रमों में जाकर विद्या ग्रहण करते थे। आश्रमों में विभिन्न स्तर के बच्चे, चाहे वह राजकुल के हों या प्रजा के किसी भी वर्ग से हों एक साथ मिल बैठकर रहते, खाते, खेलते व पढते थे। राजपरिवार के बच्चों व अन्यों में कोई भेद भाव नही होता था, बल्कि राजकुल के बच्चे भी साधारण नागरिकों के बच्चों की तरह ही रहते थे और उनको इस बात का तनिका भी आभास नहीं होने दिया जाता कि वह किसी बड़े कुल के हैं। अतः शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात जब वह राज दरबार में पहुँचते थे और राज्य व्यवस्था संभालते थे तो उनके हर कार्य में एक मानवीय दृष्टिकोंण विद्यमान रहता था जिसको परोक्ष रूप से उन्होंने आश्रम में रहकर अनुभव किया था।

अतः शिक्षक और अध्यापन प्रणाली का भी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अधिक महत्व है। कहा जाए तो शिक्षा के झेत्र में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अध्यापकों और शिक्षकों की होती है। शिक्षक ही अपने विद्यार्थियों का चरित्र व व्यक्तित्व निर्माण करते हैं और साथ ही उनको हर क्षेत्र का ज्ञान देते हैं। विद्यार्थियों में छिपी उनकी प्रतिभा को उजागर करने में भी वह पूरा सहयोग करते हैं।

परम्परागत शिक्षक का कर्तव्य एक पिता समान होता है। बच्चा जब चलना सीखता है वह बार–बार गिरता है और पिता बिना किसी स्वार्थ के बार–बार उसे खड़ा करता है। शिक्षक की भी यही भूमिका है। वह विद्यार्थियों को निःस्वार्थ भाव से जीवन में खड़े होने को प्रोत्साहित करता है। उसे जीवन की धूप–छाँव सहने योग्य बनाता है।

वह अपने उपदेशों के प्रकाश से विद्यार्थियों का अज्ञान रूपी अधकांर को दूर करते हैं। किसी ने सही ही कहा है

“A good teacher cares about the performance of the students in class room;

A great teacher cares more about the performance of the students in life.”

यही एक सच्चे और अच्छे शिक्षक की पहचान होती है। हमें आज के युग में ऐसे ही शिक्षकों को प्रोत्साहित करना है। उन्हीं के द्वारा हमारे आने वाली नई पीढ़ी का पूर्ण विकास सम्भव है, जिसमें नैतिकता, जीवन मल्ूय, चरित्र निर्माण व प्रतिभा सभी सम्मिलित है। परन्तु अफसोस की बात है कि आज की हमारी शिक्षा पद्धति में इन सब बातों की अनदेखी की जा रही है। परिणाम एक कच्ची नींव पर सुन्दर इमारत खड़ी करने का प्रयास। ऐसी इमारत जो कमजोर नींव के कारण किसी भी क्षण गिर सकती है। कच्ची नींव पर भवन का निर्माण न हो इसके लिए हमें अपनी शिक्षा प्रणाली बदलनी होगी। हमें विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों पर भी पूरा ध्यान देना होगा।

It is important to invest in education but the investment should be more in teacher education and development.

शिक्षा का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है जो अध्यात्म से जुड़ा है। अगर हम अध्यात्म को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्राप्त करते हैं तो वह हमें **''प्रज्ञान ब्रह्म''** की ओर ले जाता है, जो हमें सर्व शक्तिमान से जोड़ता है, which is the highest and purest knowledge of God.

इसको प्राप्त करने के लिए शिक्षा के साथ–साथ थोड़ा बहुत ध्यान और योग की आवश्यकता है। इसके द्वारा हमारा मस्तिष्क शांत व एकाग्रचित होता है। एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ मस्तिष्क हो सकता है। जो ज्ञान के लिए अति आवश्यक है। स्वस्थ शरीर के लिए पढाई के साथ–साथ विद्यार्थियों को खेल व अन्य बहुमुखी प्रतिभाओं की ओर ध्यान देना जरूरी है उसके बिना शिक्षा अधूरी है।

पूर्व राष्ट्रपति डा0 ए0 पी0 जे0 कलाम अपने सम्बोधन में बार–बार दोहराते और जो उन्होंने आपके विद्यालय में भी दोहराया था को मैं उधरित करना चाहूँगा।

"Where there is righteousness in heart,
there is beauty in the character;
where there is beauty in the character,
there is harmony in the home;
where there is harmony in the home,
there is order in the nation; and
where there is order in the nation
there is peace in the world"

शिक्षा के विषय में दो अन्य बात बताना भी महत्वपूर्ण है उन्हें बताकर मैं अपनी बात समाप्त करूंगा।

पहली तो विद्या बाँटने से बढती है।

"दीप जले यदि दीप से, होता बहुत प्रकाश"

दूसरी विद्या को बेचा नही जाता।

आज शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे विकास को अगर हम देखें तो पाएंगे कि यह कोई सच्चा विकास नहीं है। इस विकास ने तो केवल एक व्यवसाय का रूप ले लिया है। यहाँ शिक्षा केवल डिग्रियाँ बाँटने तक सीमित है और वह भी केवल संस्थाओं की आमदनी बढाने के लिए। इस प्रकार की शिक्षा से हमें कोई सरोकार नही। हमें एक बुनियादी शिक्षा चाहिए जो हमारे देश की नई पीढी का चरित्र निर्माण करे जिससे एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण हो और हम भारत को जगतगुरू के रूप में स्थापित कर पायें।

आज के परिवेष में राष्ट्र निर्माण में यूवा वर्ग का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान है।

What our country needs is not only iron men with nerves of steel, gigantic wills & sharp intellect but men with golden heart & beautiful mind as well, having strong moral character.

स्वामी विवेकानन्द का मिशन नवयुवकों को जगाकर भारत माता की खोई प्रतिष्ठा वापस लाना था और उसके लिए उनको नयी पीढ़ी पर पूरा भरोसा था। इस सम्बन्ध में उनकी सोच कुछ इस प्रकार थी।

(i) "My faith is in the younger generation"

(ii) "It is for the youth to build nation"

(iii) "My hope of the future lies in the youths of character"

सबका साथ और सबका विकास के लिए देश के युवा वर्ग का चेहरा होना अति आवश्यक है।

भारती पुकारती!
जाग! नौजवान जाग!

जग और जग जगा, जागरण के गीत गा!

देश के जवान जाग, शौर्य, स्वाभिमान जाग!

राष्ट्र, संस्कृति, समाज, भाग्य के विधान जाग!

जागी तरूणाई ही, राष्ट्र को सवाँरती है।

जाग! नौजवान जाग!

हमारे पूर्वजों ने देश की स्वतंत्रता का सपना देखा था। उन्होंने उसे प्राप्त किया। देश के स्वतंत्र होने के बाद न हमने कोई सपना सजोया था न कोई अपना लक्ष्य तय किया न ही राष्ट्र निर्माण की कोई नीति बनायी।

It is well said “that one who fails to plan is planning to fail”.

This is exactly what happened to our education system.

बिना नीति निर्धारित कर हम बड़े–बडे उद्योग इत्यादि लगाने व वैज्ञानिक स्तर को बढ़ावा देने में व्यस्त हो गये और इसी में राष्ट्र की उन्नति समझने लगे। हम यह भूल गये कि कोई भी राष्ट्र उतना ही सुरक्षित है जितना की उसके नागरिकों का चरित्र। चरित्र वह ज्योति है, जो सूर्यास्त हो जाने पर और सभी रोशनियों के बुझ जाने पर आलौकिक रहती है।

“सर्वोदय“, सबकी एक साथ उन्नति तभी सम्भव है जब आप अपने स्वंय के चरित्र निर्माण कर स्वयं सफलता प्राप्त करने का प्रयास करें और दूसरों को भी सफल होने में सहायक हों।

आज विद्यार्थियों का आत्मविश्वास के साथ संकल्प लेना पड़ेगा।

I will be what I want to be;

I will be the leader and not the follower.

इन्हीं शब्दों के साथ मैं सभी को धन्यवाद देता हूँ और अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

जय हिन्द